रिकॉर्ड :– कौन आया मेरे मन के द्वारे..... ॐ पिताश्री 18/1/63

बच्चे जानते हैं कि अभी कौन आए हैं, जो सन्मुख बैठे हैं। उनको यह आँखें नहीं जान सकतीं। आत्मा बुद्धि से पहचानती है बरोबर हमारा बाप आया हुआ है। खुद आए अपना परिचय दे रहे हैं। मेरा कोई आकार वा साकार शरीर नहीं है; परन्तु रूप ज़रूर है। ज्ञान सागर हूँ। रूप–बसन्त की कहानी है ना! मैं रूप ज़रूर हूँ। ज्योतिर्लिंगम् हूँ। मैंने इस तन का आधार लिया है। प्रकृति का आधार लेने बिगर मैं देखूँ कैसे? इन आँखों रूपी खिड़की से बच्चों को देखता हूँ। इनके मुख द्वारा समझाता हूँ– बच्चे, सन्यास दो प्रकार का है। एक है– हठयोग कर्म सन्यास। वो लोग राज्य योग सिखला न सके, जिन्हों के तुम अपन को फॉलोअर्स कहलाते हो– मैं फलाणे सन्यासी का फॉलोअर हूँ; परन्तु यह झूठ बोलते हो। यह बाबा भी आगे बहुतों का फॉलोअर था; परन्तु फॉलो कुछ भी नहीं करते थे। वो सन्यासी, हम गृहस्थी, तो फिर फॉलोअर कहलाना मूर्खता हुई ना! फॉलोअर को तो पूरा फॉलो कर, घर–बार छोड़, सन्यासी बनना पड़े। तो जो भी फॉलोअर बनते, वो झूठे। सन्यास तो धारण करते नहीं। वो लोग भी समझाते नहीं कि तुम फॉलोअर कहलाते हो, तो सन्यासी बनो ना। बाप समझाते हैं– यह राज्य योग है। इसमें घर–बार को त्याग नहीं करना है, सिर्फ़ पुरानी दुनिया का बुद्धि से त्याग करना है। जैसे बाप नया घर बनाता है तो फिर बुद्धि नए घर से लग जाती है। पुरानी दुनिया से ममत्व मिट जाना है। बाकी घर–बार का सन्यास न करना है। स्त्री भी अगर सन्यास कर ले तो फिर बच्चों को कौन सम्भाले? यह तो ठीक नहीं हुआ। तत्वयोगी, ब्रह्मयोगी भी बहुत हैं। तत्व से योग लगाते हैं। बाप समझाते हैं– तत्व तो हमारे–तुम्हारे आत्माओं के रहने का स्थान है। तुम कोई ब्रह्मकुमारियाँ नहीं हो। ब्रह्म तो महतत्व है। उनकी कुमारी थोड़े ही होती। बी०के० वो जो 21 कुल का उद्धार करे। पियर और ससुर घर का उद्धार करे। इसलिए भारत में कुमारियों का मान बहुत है। जब तक कुमारी पवित्र है तो सभी उनको पूजते हैं। अपवित्र बनती है तो फिर सभी के आगे माथा टेकना पड़ता। तो वो हो गया– हठयोग निवृत्तिमार्ग। उनको गृहस्थ व्यवहार से नफरत आती है और अपन को इस पुरानी छी–छी दुनिया, नर्क से नफरत है। सन्यासियों को घर–बार से नफरत होती है। तुमको नर्क से नफरत है। नफरत तब आती है जबकि स्वर्ग देखा है। आगे नफरत थी क्या! बाप कहते हैं– तुम बच्चों को स्वर्ग में ले जाने तुमको राज्य योग सिखलाता हूँ। मैं हठयोग कैसे सिखलाऊँगा! भारत पवित्र प्रवृत्तिमार्ग वाला था। यथा राजा–राणी तथा प्रजा राज्य करते हैं। उनको स्वर्ग कहा जाता है। अभी भारत अपवित्र है। उनको फिर पवित्र बनाना है। स्वर्ग की स्थापना तो परमपिता प० ही कर सकते हैं। समझाते हैं– हे भारतवासियों! तुमने पूरा आधा कल्प, द्वापर से लेकर विख पिया है। विख पीते–2 रौरव नर्क हो गया है। आपस में लड़ते–झगड़ते रहते हैं। घर–2 में, नेशन–2 में झगड़ा, सभी को हद में ला दिया है। आकाश–पानी की भी हद। भारत में भी हदें हैं। गुजरात अलग, बंगाल अलग है। टुकड़ा–2 हो गया है ना! अभी है कलियुग। सतयुग में टुकड़ा–2 नहीं होता है। वहाँ एक ही राज्य है। तुम वामन अवतार हो ना! तुमको अभी 3 पैर पृथ्वी के नहीं मिलते। फिर तुम सारी दुनिया के मालिक बनेंगे। बाप समझाते हैं– मेरे लाडले सिकीलधे बच्चे! तुमने ही 84 जन्म लिए हैं। गाया भी जाता है– चौरासी का चक्कर। जो पहला श्री कृष्ण है उनके जन्म दिखाए हैं। तुम 84 जन्मों का पूरा चक्कर फिरते हो। तुम ऑलराउण्डर हो। हार–जीत का खेल भारत पर है। भारत राजाओं का राजा डबल सिरताज था। अभी नो ताज। यह चक्कर फिरता है। यह नॉलेज बाप ही समझाते हैं। और कोई गीता आदि सुनाने वाले ऐसे थोड़े ही कहते कि हम राज्य योग सिखलाते हैं। कब कह न सके। बाप कहते हैं– मैं इस पतित दुनिया को पावन ... बनाता हूँ। अभी मुझे याद करो। मैं, माया के पिंजरे में जो फँसे प(ड़े) हैं, उन सभी को मैं लिबरेट करने आया हूँ। इन विकारों पर जीत पहनो या दान में दे दो। मैं ही तुमको राज्य योग सिखला सकता हूँ। फिर सतयुग–त्रेता में 21 जन्म तुम प्रालब्ध भोगते हैं। भारत है परमपिता प० की बर्थ प्लेस, जिन्होंने गीता सुनाई। सिर्फ़ गीता को खण्डन करने कारण परमपिता प० की बर्थ प्लेस नहीं समझते हैं। शिव जयन्ती मनाते हैं, उनकी तो

18/1/63

बहुत बड़ी होली डे होनी चाहिए। क्रिश्चियन लोग 7 रोज़ होली डे करते हैं। इनकी तो होली डे एक मास चलानी चाहिए। सारी दुनिया को पावन करने वाला ... उनकी जयन्ती का (छुट्)टी का दिन भी बन्द कर दिया है। देखो, कल विवेकानन्द की छुट्टी थी। अब उनका तो है सन्यास धर्म। वो कोई भारत का न है। वैराग मार्ग ही अलग है। एक है– भक्ति काण्ड। आधा कल्प ब्रह्मा की रात, फिर आधा कल्प कहेंगे– ज्ञान काण्ड "ब्रह्मा का दिन"। बाकी शास्त्र तो सभी भक्तिमार्ग के हैं। पढ़ते आए हैं। कहते हैं, शास्त्र अनादि हैं; परन्तु बने कब? बाप कहते हैं– यह द्वापर में बनाए हैं। गीता द्वापर में बनाई है। बाकी कृष्ण द्वापर में नहीं आया। शास्त्र द्वापर में शुरू होते हैं। देवता धर्म का धर्म शास्त्र है 'गीता', फिर इस्लामी, बौद्धी आदि धर्मों के शास्त्र हैं। पहले–2 बनी गीता। मनुष्यों ने ही बनाई। कृष्ण फिर द्वापर में कहाँ से आया जो ज्ञान सुनाया! क्या नर्क की स्थापना की? गीता से तो स्वर्ग की स्थापना हुई थी। कलियुग में वो डबल सिरताज कहाँ है? राज्य ही नहीं है। शास्त्रों का घमण्ड कितना है! इनको भी घमण्ड था ना कि इतने शास्त्र पढ़ा हूँ। गुरू किए हैं। अभी कहते हैं– इन गुरूओं को छोड़ो, मारो। यह है सभी ज्ञान के हथियार। इन्होंने फिर तलवार–कुल्हाड़ी आदि दे दी हैं। बाप कहते हैं, मैं 5000 बरस बाद तिरी पर बहिष्त ले आया हूँ, बच्चों की दिल फिर भी नर्क तरफ। स्वर्ग में चलने (की) तैयारी नहीं करते हैं। जो राजधानी 5000 बरस पहले थी, वो ही फिर से अब स्थापना हो रही है। यह है रिलीजो पॉलिटिकल गॉडली मशीन। नॉन वाइलेंस पॉलिटिकल है योगबल की। दुनिया में कभी भी कोई सृष्टि का राज्य ले नहीं सकते सिवाए देवी–देवताओं के। तुम हो पाण्डव। बाबा है रूहानी सुप्रीम पण्डा। कहते हैं, तुमको मुक्ति–जीवनमुक्ति का रास्ता बताने आया हूँ। मुक्ति और जीवनमुक्ति को याद करो। बाकी यह जो जीवनबंध धाम है, इनको भूलते जाओ। बाप नया मकान बनाते हैं तो पुराने से दिल हट जाती है। अभी हम इस नर्क से नफरत करते हैं। सन्यासी घर–बार से नफरत करते हैं। उस सन्यास और इस सन्यास में दिन–रात का फर्क है। बाबा ने समझाया है– फिर भी भारत को थमाते हैं। उपद्रवों को बन्द करने लिए यह सन्यास मार्ग है और यह तो है राज्य योग। गीता के भगवान ने भारत को स्वर्ग बनाया। फिर आधा कल्प प्रालब्ध चलती है। यह है बेहद का वर्सा। बाप कहते हैं– सिकीलधे बच्चे! श्रीमत पर चलो तो श्रेष्ठ बनेंगे। सत्य ना० की कथा भी भारत में ही होती है। अभी बेड़ा पार होता है। खेवैया अथवा बागवान उनको कहा जाता है। आधा कल्प मनुष्य काम–कटारी चलाए आदि–मध्य–अन्त दुःख पाते हैं। सतयुग में आदि–मध्य–अन्त दुःख नहीं होता। वो है अमरलोक। यह है मृत्युलोक। आधा कल्प विख पिया है तो अब विख बिगर रह नहीं सकते। बाप कहते हैं– तुम यह एक जन्म पवित्र बनो तो 21 जन्म पवित्र एवर हेल्दी–वेल्दी बनेंगे। अनेक बार भारत सॉलवेन्ट–इनसॉलवेन्ट बना है। बाकी सभी बीच के बाय प्लान्ट्स हैं। यह स्वदर्शन चक्र भारत में ही है। त्रिमूर्ति भी भारत में है। ब्र०वि०शं० तीन चित्र बनाए, फिर नाम रखा है– त्रिमूर्ति ब्रह्मा। अभी इनका कोई अर्थ तो बतावे। वो दोनों तो क्लीन शेव हैं, बाकी एक ब्रह्मा को दाढ़ी क्यों दी है? तीनों ही (इ)कट्ठे दिखलाते हैं। विष्णु के नाभि से ब्रह्मा निकला, फिर ब्रह्मा के हाथ में शास्त्र दे दिए हैं। अभी शास्त्र तो यहाँ होते हैं। बाप कहते हैं, ब्रह्मा मुख से मैं सभी शास्त्रों का सार सुनाए तुमको त्रिकालदर्शी बनाता हूँ। तुमको तीसरा नेत्र देता हूँ। और कोई भी बाप और बाप के रचना के आदि–मध्य–अन्त को नहीं जानते। त्रिकालदर्शी नहीं हैं। त्रिकालदर्शी मैं ही आकर बनाता हूँ। शूद्र से ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मण बने तभी फिर ब्राह्मण से देवता बने। बाप बैठ राज्य योग–

18/1/63

कर्मयोग सिखलाते हैं। रचना की पालना तो तुमको करनी है ना। तुम हो हद के रचयिता, मैं हूँ बेहद का। ब्रह्मा भी बेहद का हो गया। ब्रह्मा को आदिदेव, एडम भी कहा जाता है। बाप बच्चों के लिए वैकुण्ठ सौगात लाते हैं 21 जन्म लिए। कितना मोस्ट बिलवेड बाप है। कहते हैं– मेरे मोस्ट बिलवेड चिल्ड्रेन्स। बहुत नज़दीक के हैं ना! रुद्र के गले का हार पहले आकर बनते हैं, फिर विष्णु की माला। तख्त पर राज्य करते हैं, जो मायाजीत बन जगतजीत बनते हैं नम्बरवार। ऊपर में शिवबाबा, फिर युगल, फिर हैं सन्तान 108। इन माला के दाणों ने भारत को खास और दुनिया को आम स्वर्ग बनाया था। जो तख्त पर बैठे उन्हों की माला बनी है। सभी पूजते हैं। अर्थ का कुछ पता नहीं। सर्व शास्त्रमई शिरोमणि एक गीता ही है। बाप कहते हैं– मैं ब्रह्मा मुख कमल से ब्राह्मण धर्म रचयिता(रचता) हूँ। क्राइस्ट के मुख से क्रिश्चियन धर्म, ब्रह्मा मुख से ब्राह्मण धर्म। उनको पढ़ाए देवता धर्म स्थापन करते फिर क्षत्रिय धर्म। तीन धर्म रच जाते हैं। फिर और धर्म स्थापन होते हैं। पहले–2 तो चाहिए गीता। तो पहले–2 गीता बनाते हैं। फिर इनके साथ भागवत–रामायण–वशिष्ठ आदि बनाते हैं। उनको पता तो कुछ है ही नहीं। गीता पढ़ते–2 हुआ तो कुछ भी नहीं। बाप कहते हैं– यह ज्ञान प्रायःलोप हो जाता है। यह है जैसा(जैसे) ब(नियन) ट्री। बड़ का झाड़ होता है ना। तुम देखेंगे, इनका फाउंडेशन सड़ा हुआ है, बाकी निशानी रही है। और सभी धर्म तो हैं, बाकी फाउण्डेशन सड़ गया है। मैं फिर वो ही फाउंडेशन का सैपलिंग लगाए देवी–देवता किंगडम स्थापन कर, बाकी और धर्मों का विनाश करा देता हूँ, इस महाभारत लड़ाई द्वारा। इन बिगर दुनिया का विनाश हो न सके। 5000 बरस पहले यह सभी थे, फिर अब रिपीट हो रहा है। जिन्होंने विनाश देखा है, वो ज़रूर इन आँखों से देखेंगे। फिर जिन्होंने स्वर्ग का सा० किया है, वो भी प्रैक्टिकल में ज़रूर देखेंगे। विनाश–स्थापना भी तुम बच्चों को दिखाया है। बाल–लीला भी दिखाई– तुम ऐसी महाराणी बनूँगी, गोद में बच्चा होगा।

तो उन सन्यासियों का है ही वैराग मार्ग। भारत का है ज्ञान मार्ग। फिर भक्तिमार्ग नाम एक ही बार बाबा देते हैं। फिर ज्ञान की दरकार नहीं रहती। ज्ञान तो है ही राज्य योग का। ज्ञान से सद्गति हो गई फिर ज्ञान की दरकार नहीं रहती। सतयुग–त्रेता में कर्मकाण्ड का कुछ भी नहीं होता। यह है भक्ति काण्ड, वो अभी मुर्दाबाद हो जावेगा और सतयुग जिंदाबाद हो जावेगा। अच्छा, बापदादा, मीठी–2 मइया का सिकीलधे बच्चों प्रति गुडमॉर्निंग। ॐ